Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 10 (2022) pp: 208-213
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

राष्ट्रीय आन्दोलन और महिलाएँ

मोनिका गहलोत
पता :– बी–36, निशांत पार्क,
ककरोला गाँव,
नई दिल्ली – 110078

संक्षेपिका –
राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही, राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान महिला शिक्षा महिला संगठनों के गठन और भारतीय राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने महिलाओं के जीवन को पूरी तरह बदल दिया। वह आत्मनिर्भर होना सीख गई।

20वीं शताब्दी में महिला संगठनों ने कई मुद्दे उठाए थे। इनमें सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा था महिलाओं के मताधिकार से संबंधित। गांधी जी राजनीति में भी और राष्ट्रीय आन्दोलन में भी महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई महिलाएं तो नेता के रूप में उभरकर सामने आई। महिलाओं ने कई क्रांतिकारी और वाम आन्दोलनों में अपनी सक्रियता दिखाई।

***R**eceived 07 Oct., 2022; **R**evised 17 Oct., 2022; **A**ccepted 19 Oct., 2022 © The author(s) 2022.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

प्रस्तावना –

राष्ट्रीय आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही। उनकी भूमिका को स्पष्ट करना आसान नहीं है। महिलाओं द्वारा लिखी गई आत्मकथाएँ व्यक्तिगत, डायरियां और विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लिखे गए लेखों मे और राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। महिलओं की दुनिया घर की चारदीवारी के भीतर तक सीमित थी। उसे पुरुष की आज्ञाकारिणी माना जाता था। बहुत सी महिलाओं ने अपने साहस, त्याग व बलिदान, आन्दोलनों के लिए समर्पित कर दिया और पारिवारिक भूमिका के साथ–साथ राष्ट्रवादी गतिविधियों में अपनी हिस्सेदारी का परिचय दिया। पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर संघर्ष किया। गांधी जी ने स्वीकार किया कि यह स्वतन्त्रता हमारी माँ और बहनों के योगदान के बिना संभव नहीं है।

राष्ट्रीय आन्दोलनों की महिला नेता –

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में बहुत सी महिलाओं ने भाग लिया था। राष्ट्रीय स्तर पर सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी, पंड़ित कमलादेवी चट्टोपाध्याय और मृदुला सारा भाई से शुरुआत हई प्रांतीय स्तर पर केरल में ऐनी मैसकरीन और ए० वी० कुट्टी मलुअम्मा, मद्रास प्रेसीडेसी में दुर्गा बाई देशमुखी, यू० पी० में रामेश्वरी नेहरू और बी अम्मन, दिल्ली में सत्यवती देवी और सुभद्रा जोशी और मुम्बई में हंसा मेहत्ता और ऊषा मेहत्ता और भी महिलाएँ थी। बहुत सारी महिलाओं ने अपनी शुरुआत प्रांतीय स्तर पर की और वे राष्ट्रवादी केन्द्रीय स्तर तक पहुँच गई। भारतीय महिलाओं के अलावा अन्य विदेशी महिलाएँ जैसे एनो बेसेंट और मार्गेट कुजिन जैसी महिलाओं ने भारत में ब्रिटिश शासन का शोषण किया।

इस समय दुनिया के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं ने मतदान के लिए शोषण किया। इसकी पुकार भारत में भी सुनाई दी। आयरिश महिला मार्गरेट कजिन ने भारतीय महिलाओं की सहायता की मतदान के लिए और 1917 में भारतीय महिला संगठन का गठन भी हुआ। आरम्भ में यह संगठन उस समय भारतीय राज्य के सचिव इडविन मांटेग्यू के पास एक प्रतिनिधि मंडल भेजने के इरादे से बनाई गई थी। प्रतिनिधि मंडल ने नए सुधारों में महिलाओं के लिए मतदान के लिए आवाज उठाई। जिसने 1919 में भारत सरकार के अधिनियम के रूप में आकार ग्रहण किया।

20वीं शताब्दी के शुरूआत में बंगाल में जो आन्दोलन शुरू हुआ वह पहला स्वदेशी आन्दोलन था। जिसने बहुत जल्दी ही भारत में भयंकर रूप ले लिया था। इसी समय देश के विभिन्न हिस्सों में लड़कियों के लिए स्कूल और महिलाओं के लिए क्लब शुरू हुए। शिक्षा के प्रति महिलाओं के बढ़ते प्रभाव और उनकी राष्ट्रीय जागरूकता के बीच एक अच्छा सम्बन्ध था। बहुत सारी महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इस राष्ट्रीय आन्दोलन में बहुत सी अशिक्षित महिलाएँ भी थी।

महिला संगठनों में महिलाओं की भूमिका –

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान महिला संगठनों ने महिला उत्थान के साथ भारतीय राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 19वीं शताब्दी के संगठन पुरूष सुधारकों द्वारा ही स्थापित किए हुए थे। जो घर की चारदीवारी को ही महिलाओं के लिए प्राथमिक का क्षेत्र मानते थे। किंतु कुछ उदारपंथी सुधारक महिलाओं के राष्ट्र निर्माण के कार्य पक्ष में थे। महिलाओं की स्वतन्त्र पहचान के लिए सरलादेवी चौधरानी ने 1901 में नेशनल सोशल कांफ्रेंस के अन्तर्गत भारत स्त्री महामंडल की स्थापना की। यह पहला महिला संगठन था। जिसकी स्थापना एक महिला ने की थी। 1917 में एनी बेसेंट, मारग्रेट कौसिस आदि ने मद्रास में ''भारतीय महिला संघ'' की स्थापना की।

1917 में सरोजनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं के एक प्रतिनिधि मंडल ने पुरूषों के सामने महिलाओं के लिए मताधिकार और शिक्षा की सुविधाओं की माँग की और इस प्रकार विभिन्न प्रांतों की विधान सभा चुनावो में महिलाओं को मत देने का अधिकार भी मिला। कुछ समय बाद बहुत सी महिलाएँ विधान परिषद् की सदस्य भी बनी।

1925 में लेडी मेहरी बाई टाटा की पहल पर 'नेशनल कौंसिल आफ इंडिया' और 1927 में 'अखिल भारतीय महिला संघ' की स्थापना की गई। इन संगठनों के अधिकतर सदस्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भी सदस्य थे। 1927 में अखिल भारतीय महिला शिक्षा सम्मेलन का आयोजन पुणें में हुआ।

1929 में मोहम्मद अली जिन्ना ने बाल विवाह निषेध अधिनियम भी पारित किया गया। इस अधिनियम के अनुसार लड़की के लिए शादी की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई। 1931 में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में राधाबाई सुब्बारायण तथा बेगम शाहनवाज खान ने महिला प्रतिनिधियों के रूप में भाग लिया।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में आठ सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने सार्वजनिक वयस्क तथा मिश्रित निर्वाचन क्षेत्रों की माँग की गई। 1935 में मतदाता स्त्रियों का अनुपात बढ़कर 1/5 कर दिया गया और महिलाओं के लिए कुछ सीटें आरक्षित की गई और सार्वजनिक वयस्क मताधिकारों की मांग की गई। महिला संगठनों ने 'विस्तारित महिला क्षेत्र का निर्माण किया।

महिला संगठनों पर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि इन संगठनों की अध्यक्षता समृद्ध परिवारों की महिलाएं करती थी और गरीब, दलित व पिछड़े वर्ग की महिलाओं को इनमें स्थान नहीं दिया जाता था। महिला सदस्यों ने संविधान सभा में संविधान निर्माण के समय महिलाओं के लिए आवाज उठाई और पुरूष व स्त्रीयों को बराबर का हक दिलाने के लिए संविधान में प्रयास किया और भारत के स्वतन्त्र होने के बाद महिलाओं को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्राप्त हुआ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की भूमिका –

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही स्त्रियों की भूमिका में परिवर्तन हुआ। महिलाओं ने अपनी घरेलू भूमिका को निभाते हुए आन्दोलनो में हिस्सा लिया। इन सब ने पितृसत्ता को लचीला बना दिया था। 1890 में भारतीय महिला उपन्यासकार स्वर्णकुमारी घोषाल तथा ब्रिटिश साम्राज्य की पहली महिला स्नातक कांदबरी गांगुली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुई।

सावित्रीबाई फुले और पंडिता रमाबाई जैसे कुछ महिालाओं भी थी जिन्होने खुलकर औपनिवेशिक पितृसतात्मकता पर प्रहार किया। पं० रमाबाई ने तो ब्राह्मण महिला होकर भी न केवल शूद्र पुरूष से विवाह किया बल्कि विधवा होने के बावजूद सार्वजनिक जीवन में बनी रही और चुावन में उम्मीदवार बनने जैसा राजनीतिक कार्य भी किया।

बंग–भंग विरोधी आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका –

1905–1906 के बंगाल विभाजन विरोधी आंदोलन में बड़ी संख्यां में महिलाओं ने सार्वजनिक रूप से भाग लिया। इस चरण में पत्र–पत्रिकाओं विशेषकर सभाओं व महिला संगठनों के माध्यम से अनेक महिलाओं को आन्दोलन में सहभागिता हेतु प्रेरित किया गया। स्वदेशी और बहिष्कार के इस आन्दोलन में शहरी, मध्यवर्ग की सदियों से घरों में कैद महिलाएं जुलूसों और धरनों में शामिल हुई।

ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए महिलाओं ने विदेशी सामानों का बहिष्कार किया। जिसे 'पिकेटिग' कहा जाता था।

स्वामी श्रृद्धानन्द की पुत्री वेदकुमारी ने महिलाओं को संगठितकर विदेशी कपड़ों की होली जलाई वेदकुमारी की पुत्री सत्यवती ने 1928 में साइमन कमीशन के दिल्ली आगमन पर काले झंडे दिखाए।

1917 में कांग्रेस अधिवेशन के पहले दिन कांग्रेस अध्यक्ष एनी बेसेंट के अलावा दो अन्य महिलाएं कांग्रेस के मंच और कार्य में शामिल हुई। जिनमें एक सरोजनी नायडू और दूसरी अली बंधुओं की माँ बी अम्मा थी। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने महिलाओं के लिए शिक्षा और निर्वाचित संस्थाओं में प्रतिनिधित्व की माँग की थी। 1919 के बाद स्त्रियों ने राजनीतिक जूलूसों में निकालने लगी। विदेशी वस्त्रों और शराबों की दुकानों पर धरना देने लगी और खादी बुनने तथा उसके प्रचार का कार्य भी करने लगी।

गाँधीवादी दौर में महिलाओं की भूमिका –

बहुत सी घटनाओं ने निश्चित ही भारतीय महिलाओं के जीवन को बदल दिया और महात्मा गाँधी द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों से जो महिलाओं को नई दिशा और रोशनी प्रदान की उसे उन्हें आत्मनिर्भर बना दिया। वे घरों से बाहर निकल पड़ी।

*Corresponding Author: मोनिका गहलोत

गाँधीवादी आन्दोलनों में महिलाएँ प्रमुख हिस्सा बन गई। 1920–22 के खिलाफत और असहयोग आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी सीमित थी। वहीं खिलाफत आन्दोलन को अली बन्धुओं मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली की माता बी अम्मन के महत्वपूर्ण प्रयासों के लिए माना जाता है। बी अम्मन एक लोकप्रिय नाम था। उनका असली नाम अबादी बानों बेगम था। वे एक साहसी महिला थी। 1914 में जब उनके पुत्र जेल में थे त बवह राजनीति में आई क्योंकि वह मानती थी कि उद्देश्य में किसी भी प्रकार की हानि नहीं होनी चाहिए। खिलाफत आन्दोलन के दौरान उन्होंने कई सभाओं को सम्बोधित किया। कई मुद्दों पर हुई सार्वजनिक सभा में उनकी उपस्थिति ने महिलाओं को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

असहयोग आन्दोलन में पहली बार महिलाएं जेल गई। हालांकि महातमा गाँधी शुरू में महिलाओं के जेल जाने के पक्ष में नहीं थे। धीरे–धीरे जैसे–जैसे आन्दोलन आगे बढ़ता गया। तब गाँधी जी को भी अपना विचार बदलना पड़ा। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं को संबोधित कर उन्हें जेल जाने के लिए प्रेरित किया।

1921 के अन्त में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में अधिक से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। इस अधिवेशन के बाद से महिलाओं का जीवन पूरी तरह से परिवर्तित हो गया। इस समय असहयोग आन्दोलन अपने चरम पर था। अधिकांश नेता गिरफ्तार हो चुके थे। आन्दोलन की जिम्मेदारी महिलाओं के ऊपर आ चुकी थी। इसके लिए महिलाओं ने बहुत सी सभाएं की और भारी भीड़ों को संबोधित किया।

1920 के दशक को राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का जो रूप उभरकर सामने आया वह उनके पुरूष साथियों के गिरफ्तार होने के बाद सामने आया।

असहयोग आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका –

असहयोग आन्दोलन की शुरूआत में महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण किन्तु सीमित भूमिका रखी गई। जो मुखतः स्वदेशी व बहिष्कार के अभियान से सम्बन्धित थी। गाँधी जी ने महिलाओं को स्वदेशी अपनाने तथा चरखे के प्रयोग का संदेश दिया। चरखे से खादी बनाने में महिलाओं को आमदनी होने लगी। जिसके कारण पुरूष भी इस कार्य में उनकों सहयोग देने लगे। गाँधी जी के प्रयासों से असहयोग आन्दोलन के दौरान देश के भिन्न–भिन्न भागों में महिलाओं ने प्रदर्शनों, जूलूसों और सभाओं में भाग लिया। 1921 में महिलाओं ने अपने जोरदार विरोध प्रदर्शन से प्रिंस आफ वेल्स का स्वागत किया।

1921 में बंगाल के कांग्रेसी नेता चितरंजन दास कि विधवा बहन ने महिलाओं के समूह को संबोधित करते हुए कहा था कि महिलाओं को अपने देश की सेवा करने के लिए घरों को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। कलकता में महिलाओं ने खादी बेचकर शराब की दुकानों पर धरना देकर अपनी गिरफ्तारियॉ दी। असहयोग आन्दोलन में लोगों ने कानून तोड़कर जेल गए और पुलिस की लाठियां तक खाई।

गाँधी जी जगह–जगह घूमकर महिलाओं को ब्रिटिश सरकार के अनुचित कानूनों का विरोध करने के लिए प्रेरित करते रहे। असहयोग आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लेने वाली कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने बर्लिन में अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर तिरंगा फहरायज्ञं

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका –

मार्च 1930 में महात्मा गाँधी जी ने दांडी मार्च की शुरूआत की। यह यात्रा उन्होंने अपने 78 कार्यकर्ताओं के समूह के साथ की। कमलादेवी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं को प्रत्यक्ष रूप से शामिल किया। कमला देवी ने गाँधी जी को इस बात के लिए प्रभावित कर लिया की जन प्रत्यक्ष अभियान में महिलाओं की भगीदारी हेतु गाँधी जी की तरफ से अनुमति के रूप में स्वीकार किया जाए और सेवा दल की महिला शाखा के लिए यह आसान कर दिया कि वे सविनय अवज्ञा आन्दोन के सभी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी के लिए निर्देश निकाल कर उसका आयोजन कर सके।

महिला सभा जूलूस दुकानों पर धरना देना, नमक बनाना और उसे बेचना आदि पूरे देश की सामान्य क्रियाविधि हो गई।

मनमोहनी सहगल जुत्सी ने अपनी आत्मकथा में एक ऐसी महिला की कथा को उजागर किया है। जो लाहौर जेल में बन्द थी। वह एक सभा करने के जुर्म में गिरफ्तार हुई थी। उसके जेल जाने से उसका पति नाराज हो गया। उसने धमकी दी की वह जब जेल से छूटकर आएगी तब वह उसे अपने घर में घुसने नहीं देगा। मनमोहनी ने जब पति से बात की तो उसने बताया कि वह इस बात से नाराज नहीं हुए थे कि उसकी पत्नी जेल गई थी। उसे उसके कार्य पर गर्व था। वह परेशान इसीलिए था। क्योंकि उसकी पत्नी ने जेल जाने से पहले उसकी अनुमति नहीं ली थी।

बंगाली सुचेता मजुमदार एक सिन्धी जयत कृपलानी ने अतरंग जो गाँधी जी के अनुयायी थे। उनसे विवाह किया। पर वह गृहस्थी जिम्मेदारियों से दूर रही। उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्र निर्माण में लगा दिया। बहुत सारी महिलाओं ने पूरी उम्र अविवाहित रहने का फैसला किया। महादेवी वर्मा जैसी हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका भी एक उदाहरण है। इन्होंने निष्ठावान राष्ट्रवादी होने के बावजूद अपने कैरियर की और अग्रसर रही।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका –

हिन्दू महिलाएं ही नहीं मुस्लिम महिलाएं भी धीरे–धीरे असहयोग आन्दोलन से जुड़ रही थी। सितम्बर 1992 में बी अम्मा ने शिमला दौरे कर वहां कि महिलाओं को खादी पहनने के लिए प्रेरित किया। बी अम्मा ने 'आल इण्डियन

लेडीज कांफ्रेंस' में 6000 महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा था कि यदि पुरूष गिरफ्तार हो जाये तो महिलाएँ धरना प्रदर्शन करे और झंडे को लहराती रहें। हसरत मोहानी की बेगम ने भी मर्दाना वेश धारण कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया और तिलक के गरम दल में शामिल होने पर जेल गई।

सरोजिनी नायडू –

1925 में कानपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता 'भारत कोकिला' सरोजिनी नायडू ने की। जिन्हें कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनने का गौरव भी प्राप्त है। सरोजिनी नायडू 1914 में पहली बार गाँधी जी से इंग्लैण्ड में मिली थी और उनके विचारों से प्रभावित होकर देश के लिए समर्पित हो गई थी। 1932 में सरोजिनी नायडू ने दक्षिण अफ्रीका में भारत का प्रतिनिधित्व किया। देश की स्वतन्त्रता के बाद सरोजिनी नायडू उतर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल भी बनी। स्वतन्त्रता आन्दोलन में महिलाओं ने राष्ट्रवादियों को विविध प्रकार से प्रोत्साहन भी दिया।

इंदिरा प्रियदर्शिनी –

बारह वर्ष की इंदिरा प्रियदर्शिनी ने बच्चों को लेकर एक 'चरखा संघ' और 'वानर सेना' का गठन किया था। जिसका उद्देश्य सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय मदद करना और एक ठोस आधार के साथ उसे बढ़ावा देना था। 1938 में इंदिरा 'प्रियदर्शिनी' कांग्रेस की सदस्य बनी और स्वतंत्रता आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ी रही। 1947 में इंदिरा 'प्रियदर्शिनी' ने दिल्ली के दंगा पीड़ित क्षेत्रों में गाँधी जी के निर्देशों के अनुसार काम किया।

विजयलक्ष्मी पंड़ित –

नेहरू परिवार की बेटी विजयलक्ष्मी पंड़ित भी गाँधीजी से प्रभावित होकर जंग–ए आजादी में कुद पड़ी। विजयलक्ष्मी पंड़ित एक पढ़ी–लिखी महिला थी। विदेशों में आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1936 में वह उतर प्रदेश असेंबली के लिए चुनी गई। 1937 में भारत की पहली महिला कैबिनेट मंत्री बनी और 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में विजयलक्ष्मी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। विजयलक्ष्मी स्वतन्त्र भारत की पहली महिला राजदूत थी। जिन्होंने मास्को, लंदन और वाशिंटन में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में आदिवासी महिलाओं की भूमिका –

1931–1932 के कोल आन्दोलन में आदिवासी महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई थी। बिरसा मुंडा के सहयोगी गया मुंडा की पत्नी माकी अपने बच्चे को गोद में लेकर फरमा बलुआ से अंग्रेजों से अंत तक लड़ती रही थी। 1930–1932 में मणिपुर में अंग्रेजों के विरूद्ध सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व नागा रानी गिडाल्यू ने किया। काफी समय तक वह काल कोठरी में रही। 1935 के बाद महिलाएँ विधानमंडलों के चुनाव में वोट देने तथा उम्मीदवारों के रूप में उतरने लगी। अनेक महिलाएँ 1937 में कांग्रेसी सरकार में मंत्री और संसदीय सचिव बनी और सैकडो महिलाएँ स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में सदस्य चुनी गई।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में विदेशी महिलाओं की भूमिका –

ऐनी बेसेंट –

लंदन में जन्मी एनी बेसेंट थिओसोफिकल सोसायटी से जुड़ने के बाद भारत आई थी। ऐनी बेसेंट थिओसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष थी। एनी बेसेंट 1917 में भारतीय महिला संघ की पहली अध्यक्ष बनी। जो महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों के लिए मांगों को आगे बढ़ाने का कार्य करती थी।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित होकर बेसेंट ने 1898 में बनारस में सेंट्रल हिंदू कालेज की नींव रखी। जो 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया गया ऐनी बेसेंट ने 'न्यू इंडिया' और कामनवील पत्रों का संपादन करते हुए आयरलैंड के 'स्वराज्य लीग' की तर्ज पर सिंतबर 1916 में भारतीय होमरूल लीग की स्थापना की। जिसका उद्देश्य स्वशासन प्राप्त करना था। 1917 में ऐनी बेसेंट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हो गई। एनी बेसेंट को 1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष होने का गौरव भी प्राप्त है।

मारग्रेट नोबुल :–

आयरलैंड की मूलनिवासी मारग्रेट नोबुल (भगिनी निवेदिता) विवेकानंद के दृष्टिकोण से प्रभावित होकर भारत को अपनी कर्मभूमि मान लिया था। भारत आकर भगिनी निवेदिता ने स्त्रियों की शिक्षा और उनके बौद्धिक उत्थान के लिए प्रयास किया। भगिनी निवेदिता ने अकाल और महामारी के दौरान पूरी निष्ठा से भारतीयों की सेवा की।

मैडम भीकाजी कामा :–

भारतीय मूल की फ्रांसीसी नागरिक मैडम भीकाजी कामा ने दूसरे देशों में जाकर भारत की स्वतन्त्रता की पुरजोर वकालत की। मैडम कामा का पेरिस से प्रकाशित 'वंदेमातरम' पत्र प्रवासी भारतीयों में बहुत लोकप्रिय था। जर्मनी में 22 अगस्त 1907 में हुई 7वीं अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में 'वंदेमातरम' अंकित भारतीय तिरंगा फहराने का श्रेय मैडम को ही प्राप्त है।

*Corresponding Author: मोनिका गहलोत

मैडलिन स्लेड :–
इंग्लैंड के ब्रिटिश नौसेना के एडमिरल की पुत्री मैडलिन स्लेड ने जिन्हें गाँधी जी ने मीराबेन का नाम दिया था। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मीराबेन गाँधी जी के साथ आगा खाँ महल में कैद रही। मीराबेन ने भारत में जन्म नहीं लिया। किन्तु वह सच्चे अर्थों में भारतीय थी।

म्यूरियल लिस्टर :–
म्यूरियल लिस्टर ने इंग्लैंड में भारत की स्वतन्त्रता का समर्थन किया। द्वितीय गोलमेल सम्मेलन के दौरान गाँधीजी इंग्लैंड में म्यूरियल लिस्टर के 'किंग्सवे हाल' में ही ठहरे हुए थे। म्यूरियल लिस्टर ने गाँधीजी के सम्मान में एक भव्य समारोह भी आयोजित किया था।

नेली सेनागुप्ता :–
बंगाल के निवासी जतीद्र मोहन सेनागुप्ता पढ़ने के लिए इंग्लैंड गये तो वही वर्ष 1909 में नेली से उनका विवाह हो गया। जतीद्र के भारत आने पर नेली भी उनके साथ भारत आ गई। 1921 में असहयोग आन्दोलन में उन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया। 1933 में कोलकाता अधिवेशन के लिए निर्वाचित अध्यक्ष मालवीय गिरफ्तार कर लिये गये तो नेली को ही कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया था। नेली सेनागुप्ता वर्ष 1940 और 1946 में निर्विरोध बंगाल असेंबली की सदस्य चुनी गई। भारत की आजादी में योगदान देने वाली नेली सेनागुप्ता की मृत्यु 23 अक्तूबर 1973 को कोलकाता में हुई।

भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका :–
भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं ने भारतीय स्वतत्रता के अनुशासित सिपाही की तरह अपनी भूमिका निभाई। इनमें से कुछ प्रमुख है।

ऊषा मेहता :–
ऊषा मेहता ने बबई में भूमिगत होकर रेडियो की शुरूआत की और जब सरकार ने सभी संचार माध्यमों पर रोक लगा दी तो उन्होंने भूमिगत रहकर कांग्रेस रेड़ियो से प्रसारण कयिा। ऊषा मेहता की आवाज देशभक्ति व स्वतन्त्रता की आवाज बन गई थी।

अरूणा आसफ अली :–
अरूणा आसफ अली और सुचेता कृपलानी ने अन्य आन्दोलनाकारियों के साथ भूमिगत होकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया। हरियाणा के एक रूढ़िवादी बंगाली परिवार में जन्मी अरूणा आसफ अली एक प्रबल राष्ट्रवादी और आन्दोलनकर्मी महिला थी। जिन्होंने परिवार और स्त्रीत्व के तमाम बंधनों को तोड़कर खुद को जंग–ए–आजादी को समर्पित कर दिया था। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान अरूणा आसफ अली को अपनी गतिविधियों के कारण जेल जाना पड़ा। अरूणा आसफ अली ने राष्ट्रीय कांग्रेस की मासिक पत्रिका 'इंकलाब' का भी संपादन किया। अरूणा आसफ अली के योगदान के कारण भारत सरकार ने 1998 में उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया है।

सुचेता कृपलानी :–
सुचेता कृपलानी ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन के हर चरण में बढ़–चढ़कर भाग लिया। 1946 में सुचेता कृपलानी को असेंबली का अध्यक्ष चुना गया। आजादी के बाद सुचेता कृपलानी 1958 से लेकर 1960 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जनरल सेक्रेटरी रही। 1963 में उतर प्रदेश की मुख्यमंत्री और भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी।

कस्तूरबा गाँधी :–
स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान महात्मा गाँधी को उनकी पत्नी कस्तूरबा गाँधी ने भी अपना पूरा समर्थन दिया। कस्तूरबा गाँधी ने न केवल हर कदम पर अपने पति का साथ दिया बल्कि कई बार स्वतंत्र रूप से और गाँधी के मना करने के बावजूद जेल जाने और संघर्ष करने का निर्णय लिया। ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' प्रस्ताव पारित होने के बाद जब गाँधीजी आगा खाँ पैलेस (पूना) में कैद कर लिये गये तो कस्तूरबा उनके साथ जेल गई। 1930 में दांड़ी में पुरूषों के बाद महिलाओं ने अपनी भूमिका निभाई। किन्तु 1942 के आन्दोलन में महिलाओं ने पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया।

किसान एवं वामपंथी आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका :–
किसान और वामपंथी आन्दोलनों के दौरान भी स्त्रियां पहली पंक्ति में दिखाई पड़ी। 1912–1914 में बिहार में जतरा भगत ने जनजातियों को लेकर ताना आन्दोलन चलाया। 1930 के दशक में ऊषाबाई डांगे जैसी कम्युनिस्ट महिलाओं ने मम्बई में सूती मिलों में काम करने वाली श्रमिक महिलाओं को संगठित किया। 1939 में पहली बार राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए देशव्यापी अभियानों में कम्यूनिस्ट और राष्ट्रवादी महिलाओं ने एक साथ काम किया। 1940 तक वामपंथी आल इंड़िया स्टूड़ेंटस फेडरेशन बन चुका था। जिसमें अनेक छात्राएं शामिल थी।

1946 में समांती उत्पीडन के खिलाफ चलाये गये तेभागा व तेलंगाना आन्दोलन में महिलाओं ने ऐतिहासिक भागीदारी निभाई। तेभागा आन्दोलन में किसान महिलाओं ने 'नारी वाहिनी' दल बनाकर उपलब्ध हथियारों के बल पर औपनिवेशिक राज्य से लोहा लिया। 1946 में जमीनी सम्पति व निजी अधिकारों के साथ केरल की वामपंथी महिलाओं ने पुरूषों के साथ त्रावनकोर की सत्ता के विरूद्ध आन्दोलन किया और सामंती ताकतों को हराया।

वर्ली आदिवासियों के लिये वामपंथी नेत्री गोदवरी पास्लेकर ने संघर्ष किया। कपड़ा मजदूरों के समर्थन में कम्यूनिस्ट ऊषाताई डांगे व पार्वती भोरे ने सक्रिय भूमिका निभाई। कम्यूनिस्ट महिलाओं ने सम्पति संबंधी अधिकार,

*Corresponding Author: मोनिका गहलोत

व्यक्तित्व अधिकार और कानूनी अधिकार जैसे जरूरी बदलावों की जोरदार ढ़ंग से मांग की। किन्तु इन महिलाओं ने शायद ही पितृसत्ता जैसी गंभीर समस्या का विरोध किया था। कम्यूनिस्ट नेता ही कम्यूनिस्ट महिलाओं को बराबर का दर्जा नहीं देते थे, और महिलाओं को सिर्फ सहायक व द्वितीय दर्जो की भूमिका निभाने का जिम्मा दिया जाता था। सक्रिय भूमिका निभाने वाली महिलाएँ भी आन्दोलन के समाप्त होते–होते पितृसत्तात्मक संरचना में वापस लौट जाती थी।

क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका :–

एक और गाँधी जी के नेतृत्व में अनेक देशभक्त महिलाएँ राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो रही थी, वहीं दूसरी और देश के सभी हिस्सों में क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी।

सुशीला दीदी :–

काकोरी कांड के कैदियों के मुकदमे की पैरवी के लिए सुशीला दीदी ने अपनी स्वर्गीय माँ द्वारा विवाह के लिए रखे गये 10 तोला सोने को दान कर दिये थे। 1930के सनिवय अवज्ञा आन्दोलन में सुशीला दीदी ने इंदुमति छझ नाम से भाग लिया और गिरफ्तार भी हुई।

दुर्गा भाभी :–

'दि फिलासफी आफ बम' क लेखक भगवतीचरण बोहरा की पत्नी दुर्गादेवी बोहरा क्रान्तिकारियों के बीच में दुर्गा भाभी नाम से जानी जाती थी। दुर्गा भाभी ने 1927 में लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेने के लिए लाहौर में बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता की थी। बम्बई के गर्वनर हेली को मारने के लिए दुर्गा भाभी ने ही गोली चलाई थी। जिसमें टेलर नामक एक अंग्रेज घायल हो गया था। बम्बई कांड में दुर्गा भाभी के विरूद्ध वारंट जारी हुआ और वह काफी समय तक फरार रहने के बाद 12 सितम्बर 1931 को लाहौर में गिरफ्तार कर ली गई।

लतिका घोष :–

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरूद्ध संघर्ष में महिला क्रांतिकारी का पहला प्रत्यक्ष उदाहरण 1928 में मिला। जब सुभाष चन्द्र बोस के कहने पर लतिका घोष ने महिला राष्ट्रीय संघ शुरू किया। कोलकाता में ही रहे कांग्रेस अधिवेशन में बोरा ने कर्नल लतिका घोष के नेतृत्व में 'वोमेन वालंटियर काप्स' का गठन किया। जिसमें 128 महिला स्वयंसेवको ने सैनिक वर्दी में परेड़ की।

राष्ट्रीय आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका का मूल्यांकन :–

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं ने देशभक्ति व विदेशी शासन से मुक्ति के भाव से प्रेरित होकर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया और घरेलू व सार्वजनिक जीवन की जिम्मेवारियों को एक साथ निभाया। किंतु भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका कई अर्थों में विरोधाभासी थी। अपने देश व मातृभूमि से अत्यंत प्रेम करने के कारण स्त्रियां स्त्री–मुक्ति को विशेष प्रमुखता न देकर राजनीतिक मुक्ति के लिए संघर्ष करती रही। गाँधी जी ने महिलाओं को घरों से बाहर निकालकर राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल होने को कहा। सरादेवी चौधरानी, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी जैसी महिलाओं ने रालनीतिक मुक्ति के साथ–साथ मताधिकार समान अधिकार चुनाव राजनीति में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए संघर्ष किया।

राष्ट्रीय आन्दोलनों में नेताओं ने कभी भी लैंगिक समानता जैसे मुद्दे नहीं उठाये, न ही कभी पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था को चनौती दी। राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न चरणों में स्वयं महिलाओं ने पितृसत्ता को चुनौती नहीं दी। राष्ट्रवादी आभेजात वर्ग में भी महिलाओं को सीमति सीमाओं में रहकर गतिविधियों में भाग लेने की छूट दी, पर पितृसत्ता की पकड़ कभी कमजोर नहीं होने पाई।

महिलाएँ पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर भारतीय स्वतन्त्रता के सपने को अपनी आँख में संजोये आगे बढ़ा रही थी। क्रान्तिकारी व कम्यूनिस्ट आन्दोलनों में भी छात्राओं व महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी। किन्तु यहाँ भी पितृसत्ता का थोड़ा कम किन्तु स्पष्ट प्रभाव था। महिला संगठनों ने महिला मताधिकार पर तो विशेष जोर दिया। लेकिन पितृसता का प्रभाव कम नहीं हुआ। इस तरह महिलाओं ने पितृसत्ता की जकड़न के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी भागीदार दिखाई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शेखर बधोपाध्याय, पलासी से विभाजन तक और उसके बाद, 2015
2. अपर्णा बसु, मृदुला साराभाई : ए रेबेल विथ ए काज, नई दिल्ली, 1996
3. अरूणा आसफ अली, द रिसर्जेन्स आफ इंडियन वीमेन, नई दिल्ली, 1991
4. विपन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास, नई दिल्ली, 2019
5. अरूणा आसफ अली, फ्रैग्मेन्ट्स फ्राम द पास्ट, नई दिल्ली, 1989
6. डॉ० कांडियोती, विमेन, इस्लाम एंड द स्टेट लंदन, 1991
7. बिपन चंद्र और अन्य, इंडियाज स्ट्रगल फार इंडिपेन्डेन्स, नई दिल्ली, 1989
8. जेराल्डीन फोबीस, वीमेन इन मार्डन इंडिया, नई दिल्ली, 1996

*Corresponding Author: मोनिका गहलोत